ww[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.

वर्ष: 70 अंक 3

सृष्टि संवत 1960853114

1 दिसम्बर 2013

दयानन्दाब्द 189

वार्षिक : 100 रू.

आजीवन : 1000 रू.

दूरभाष : 2292926, 5063726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 35, 28/1 दिसम्बर 2013 तदनुसार 16 माघ सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आओ! वेदोद्यान चलें

-ले० श्री भद्रसेन 182-शालीमार नगर होशियारपुर

(गतांक से आगे)

उत्तरार्चिक में नौ प्रपाठक और कुल 1225 मन्त्र हैं। इसमें ऊह और ऊह्यगान हैं, जिनको विकृति (कार्य) नाम से भी पुकारते हैं, क्योंकि ये मूलगानों के ही क्रमश: विकार (कार्यरूप) हैं। अत: ग्रामगान के साथ ऊह का और आरण्यगान के साथ ऊह्य का सम्बन्ध है। कुछ के विचार से सामवेद केवल सामानों के जो मूलगान हैं, उन गानों के उदाहरणभूत मन्त्रों का संग्रह ही है। 'गीतिषु सामाख्या' और 'ऋचि अध्यूढं साम गीयते' वाक्यों से भी ऐसा ही झलकता है।

महाभारत (गीता 10,12) में वेदानां सामवेदोऽस्मि पद द्वारा अन्य वेदों की अपेक्षा साम को विशेष महत्त्व दिया गया है। साम शब्द-षो (अन्तकर्मणि) धातु से बनता है। सुन्दर-सुख-प्रीतिदायक वचन ही साम है। साम-संगीत की तरह सामञ्जस्य का भी द्योतक है। सामवेद को उद्गाता का वेद माना जाता है और उद्गाता का यज्ञीय विधान में गान से विशेष सम्बन्ध है। इसीलिए ही गाने योग्य मन्त्रों की साम संज्ञा है। गान संगीत विद्या का एक मुख्य अंग है। छान्दोग्य और बृहदारण्यक उपनिषदों में साम का स्वर शब्द के साथ सम्बन्ध दर्शाया गया है। अत: आन्तरिक प्रयत्न से प्रेरित वाक्इन्द्रिय का गानात्मक जो विशेष व्यापार है, वही गान है और गान में आलाप-संलाप आदि का विशेष सम्बन्ध होता है।

अधिकतर ऋग्वेद के मन्त्र ही साम में है, अत: ऋग्वेद के मन्त्रों को गानात्मक विशेष प्रकार से उच्चारण करने पर ही उन्हीं का नाम साम हो जाता है। अत: ईश्वर उपासना में भक्ति रस में निमग्न हुए व्यक्तियों द्वारा जो ऋग्वेदादि के मन्त्र गानात्मक रूप में गाये जाते हैं वे ही साम कहलाते हैं। यज्ञ, याग आदि में गानविद्या के ढंग से उद्गाता द्वारा गाया जाने वाला वेद ही सामवेद है। षड्ज, ऋषभ, मध्यम, गान्धार, धैवत, निषाद, पञ्चम इन सात स्वरों तथा विकार, विश्लेषण, विकर्षण, अभ्यास, विराम, स्तोभ नामक साम विकारों का गान में विशेष स्थान है। सामवेद के संस्कृति में आचार्य सायण, माध्व, भरतस्वामी के मध्य-कालीन भाष्य हैं। श्री भागवतानन्द जी ने इन दिनों सामवेद पर विशेष कार्य किया है। हिन्दी भाषा में श्री तुलसीराम, जयदेव, हरिश्चन्द्र, वैद्यनाथ, ब्रह्ममुनि, हरिशरण, धर्मदेव जी आदि विद्वानों का कार्य विशेष उल्लेखनीय है।

8. अथर्ववेद विवेचन

वैदिक साहित्य की याज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार अथर्ववेद ब्रह्मा का वेद माना जाता है। ब्रह्मा का अधिकतर कार्य मन से होता है, तभी तो कहा जाता है, कि ब्रह्मा मन द्वारा अन्य ऋत्विजों से अतिरिक्त कार्य का संस्कार सम्पादन करता है। मन (अन्त:करण) विचारों का आगार है। विचार ही आचार का आधारभूत तत्त्व है। मन एवं विचारों के सम्बन्ध में यह वेद पर्याप्त विवेचन करता है। अथर्व शब्द पुरोहित के अर्थ में भी आता है। पारसियों के धार्मिक ग्रन्थ अवेस्ता में भी अथर्व-पुरोहित अर्थ में है। इस वेद में पुरोहित सम्बन्धी अनेक उपमायें भी मिलती हैं।

अथर्ववेद में बीस काण्ड हैं, जिनके 730 सूक्तों में 5977 कुल मन्त्र हैं। कुछ के विचार से दश अधिक हैं। अथर्ववेद की नौ शाखाओं की वैदिक वाङ्मय में चर्चा मिलती है, जिनके नाम भी भिन्न-भिन्न ग्रन्थों में कुछ भिन्न-भिन्न मिलते हैं। आजकल शौनक और पैपलाद, ये दो नाम ही अधिकतर लिए जाते हैं। पर पैपलाद के त्रुटित रूप में ही दर्शन होते हैं और प्रचलित अथर्ववेद ही शौनक शाखा है।

यज्ञीय प्रक्रिया के अनुसार ऋग्, यजु और सामवेद का श्रौत (श्रुति-प्रतिपादित) यज्ञों से सम्बन्ध माना जाता है, परन्तु अथर्व का गृह सम्बन्धी कर्म-काण्ड, राज्याभिषेक और पौराहित्य कर्म से है। अथर्व में भी बहुत सारे मन्त्र ऋग्वेद वाले हैं और विशेषत: सातवां काण्ड। बारहवें काण्ड का पृथ्वी (भूमि) सूक्त प्रसिद्ध है। 15 और 16 काण्ड की शैली ब्राह्मण ग्रन्थों जैसी गद्यमयी अधिक है। चौदहवें काण्ड में विवाह प्रकरण है। अठारहवें में अन्त्येष्टि का विवेचन है।

अथर्ववेद में विशेष रूप से बारह विषयों का वर्णन मिलता है।-रोग से मुक्ति के साधन, 2-दीर्घ आयु या स्वास्थ्य प्राप्ति, 3-अन्त: और बाह्य हानिकारक तत्त्वों का निवारण, 4-स्त्री विषयक, 5-समाज एवं व्यक्तियों का समन्वय, 6-राज्य कार्य प्रशासन व्यवस्था, 7-ज्ञान एवं ज्ञानी, 8-प्रगतिबोधक एवं भयमुक्ति का ढंग, 9-बुरे कर्मों से बचने का प्रकार, 10-सृष्टि विद्या, 11-वैयक्तिक जीवन की उन्नति, 12-यज्ञविद्या।

अन्य वेदों की अपेक्षा अथर्ववेद की भाषा अधिक सरल तथा ललित है। भावागम्भीर्य की दृष्टि से ब्रह्मचर्य और पृथिवी सूक्त विशेष दर्शनीय हैं। ब्रह्मचर्य सूक्त में शिष्य और शिक्षक का शिशु-माता जैसा जहां आत्मीय सम्बन्ध दर्शाया है वहां शिक्षा का उद्देश्य जीवन का पूर्ण विकास कहा है। इसी भाव को पुरुष शब्द से भी व्यक्त किया जाता है। भूमि सूक्त वेद के सार्वभौम, सार्वकालिक और विश्वजनीन रूप को चरितार्थ करता है। यहां भूमि के किसी विशेष खण्ड की बात नहीं है, अपितु सारी भूमि को सामने रखकर चित्रण किया गया है। भूमि के वासियों का उसके अन्न-जल आदि के सेवन से उसके साथ माता का सम्बन्ध माना गया है। उदाहरण की दृष्टि से इस सूक्त का प्रथम मन्त्र परखिए-

आज सारे संसार में बच्चे से लेकर बूढ़े तक हर क्षेत्र का व्यक्ति अपने-अपने जीवन के प्रत्येक कदम पर प्रगति और सफलता चाहता है। वह इसके लिए यथाशक्ति हर सम्भव प्रयास करता है। आज के संसार की हर गतिविधि और चहल-पहल की मूल भावना भी यही ही है। जहां प्रगति तथा सफलता है, वहीं जीवन है। वेद ने प्रगति के मूल-मन्त्र को बताते हुए कहा है-

सत्यं बृहत् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ: पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी न: कृणोतु॥

सत्यम्=मन वाणी और कर्म की एकता, छल-कपट रहितता, ईमानदारी। बृहत्-हृदय की विशालता, उदारता, दिल में अपने-पराए का पक्षपात न होना, सहिष्णुता। ऋतम्=नियम, व्यवस्था, मर्यादा। उग्रम्=कठोरता, दृढ़ता, न्याय, दण्ड, संयम। दीक्षा=योग्यता, दक्षता। तप:=कष्ट सहन की शक्ति ब्रह्म=ज्ञान, शिक्षा, विद्या और यज्ञ:=श्रेष्ठतम कर्म, सुगन्धि-परोपकार की भावना ही पृथिवीम्=प्रगति, विकास को धारण करते हैं। अर्थात् इन्हीं सत्य आदि गुणों से ही पृथिवी पर रहने वाले प्राणियों विशेषत: बुद्धि जीवी मानव समाज का संवर्धन, संरक्षण निर्भर है। सत्य आदि गुणयुक्त मानवों वाली पृथिवी ही अतीत, वर्तमान व भविष्य की रक्षिका हो सकती है। यही भावना हमारे लोक, जीवन, परिवार, समाज, कार्य को विस्तृत करती है। इन्हीं गुणों में ही किसी की रक्षा, वृद्धि, सफलता, कीर्ति छिपी है। हमारे जीवन, परिवार, समाज, संसार को सत्य-शिव-सुन्दर बनाने का यही मूलमन्त्र है।

इस विवेचन से स्वत: सिद्ध हो जाता है, कि वेद जीवन की सजीवता, सफलता का सुन्दर सन्देश देते हैं। (क्रमश:)

www.thearyasamaj.org

'ईश्वर' वेद और विज्ञान की दृष्टि में

-शिवनारायण उपाध्याय 73 शास्त्री नगर, दादाबाड़ी कोटा। (राजस्थान)

(गतांक से आगे)

न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्यनाम महद् यश:॥ यजु. 32.3

वेद की यह भी मान्यता है कि परमात्मा एक ही है।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्न्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। ऋ. 10.121.10

इसी प्रकार ऋग्वेद में कहा गया है कि परमात्मा एक है परन्तु विद्वान् लोग उसे अलग अलग नाम से पुकारते है।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहु:।

ऋ. 1.164.46

वेद की मान्यताओं पर हमने पर्याप्त चिन्तन कर लिया है अब हम ब्रह्म के विषय में वैज्ञानिकों के विचारों पर चिन्तन करते हैं। सृष्टि उत्पत्ति के विषय में विज्ञान में दो मतों पर विचार किया जाता है। पहला मत अल्फर-बेथ-गेमोका है जिसके अनुसार विश्व विकसित हो रहा है और दूसरा मत बौण्डी-गोल्डी-होइल का है जिसके अनुसार विश्व में निरन्तर सृजन की प्रक्रिया चल रही है। पहले मत के अनुसार यह विश्व ताप की सघनता और तापमान की उच्च अवस्था से विस्फोट होने के कारण बना है। फ्रिटजाफ काप्रा का कहना है कि विस्फोट के समय यदि इलेक्ट्रोन पर चार्ज थोड़ा कम होता तो विस्फोट फुस्स होकर रह जाता और सृष्टि की उत्पत्ति नहीं होती और यदि विस्फोट के समय इलेक्ट्रोन पर चार्ज अधिक होता तो विस्फोट इतना भयंकर होता कि कुछ ही क्षण में सब कुछ अनन्त में समा जाता और फिर भी सृष्टि की उत्पत्ति नहीं होती। इससे लगता है कि किसी अन्यतम् बुद्धि सम्पन्न शक्ति ने योजनाबद्ध ढंग से विस्फोट किया जिससे इलेक्ट्रोन पर उतना ही चार्ज उत्पन्न हुआ जितना कि सृष्टि की उत्पत्ति के लिए आवश्यक था, साथ ही विस्फोटक शक्ति निराकार थी क्योंकि कोई भी शरीर धारी विस्फोट के ताप को सहन नहीं कर सकता था। वर्तमान युग में भौतिकी के वैज्ञानिकों में Stephen Hawking की बड़ी प्रसिद्धि है। उन्होंने अपनी पुस्तक Abrief History of Time के अध्याय Origin and Fate of the Universe के अन्तिम पेरेग्राफ में लिखा है- With the success of scientific theories in describing events, most people have come to believe that Got allows the universe to evolve according to a set of laws and does not intervane in the universe to break these laws. However the laws do not tell us what the universe should have looked like when it started it would be uo to God to wind up clockwork and choose how to start it off. So long as the universe had a beginning, we would suppose it had a creator. But if the universe is really completely self contained having no bound any or edge, it would have neither beginning norend it would simply be. what place then for a creator. घटनाओं का वर्णन करने वाले विज्ञान के नियमों की सफलता के साथ अधिकांश व्यक्ति यह विश्वास करने लगे हैं कि परमात्मा सृष्टि को कुछ नियमों के अनुरूप उत्पन्न होने देता है, विकसित होने देता है तो सृष्टि के बीच में इन नियमों को तोड़ने के लिए दखल नहीं देता है। फिर भी यह नियम हमें यह नहीं बताते कि जब यह सृष्टि प्रारम्भ हुई तब कैसी दिखती थी। यह तो ईश्वर पर ही निर्भर है कि वह कैसे घड़ी की तरह चलावे और यह चुने कि उसका अन्त कैसे हो ? जहाँ तक सृष्टि के उत्पन्न होने की मान्यता है वहाँ तक हमें मानना होगा कि इसका कोई निर्माता है। परन्तु यदि सृष्टि वास्तव में अपने आप में पूर्णरूप से अपने आप में समाधी हुई है और उसकी कोई सीमा या अन्त नहीं है तो न तो इसकी उत्पत्ति होगी और न अन्त होगा तब निर्माता के लिए कौन सा स्थान होगा? परन्तु अब यह सिद्ध हो चुका है कि सृष्टि की उत्पत्ति Big Bang के साथ हुई है और सन् 1929 में एडविन हुब्बल ने आकाश की खोज करके यह सिद्ध कर दिया है कि सृष्टि फैल रही है और जो Galaxy निहारिका मंडल हमसे जितना अधिक दूर है उतनी तेज़ी से वह हमसे दूर भाग रही है। उसने यह भी ज्ञात कर लिया है कि कौन सी Galaxy हमसे किस गति दूर हट रही है और उस निहारिका मंडल की हमसे कितनी दूरी है। अब माना यह जाता है कि सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व सब कुछ नजदीक था तो फिर यह निहारिका मंडल कितने समय पूर्व हमसे अलग हुआ वही समय सृष्टि उत्पत्ति का होगा। फिर सृष्टि की आयु निकालने का एक सूत्र भी उसने दिया। V=HR यहाँ V निहारिका मंडल के दूर भागने की गति है, R निहारिका मंडल की पृथ्वी से दूरी है। अब यदि दूरी में गति का भाग दे दें तो सृष्टि की आयु आ जावेगी। तो सृष्टि की आयु R/V=1/H वर्ष 10^d लाख प्रकाश वर्ष की निहारिका मंडल पृथ्वी से 19^d मील की गति से दूर भाग रही है। अब सृष्टि की आयु निकालना सरल है। अब चूंकि स्वयं Hawking ने स्वीकार लिया है कि सृष्टि की उत्पत्ति हुई है तो यह भी सिद्ध हो गया कि इसका निर्माता ईश्वर भी है। वेद की यह भी मान्यता है कि सृष्टि की उत्पत्ति होने के पश्चात् परमात्मा उसके अथवा जीवात्मा के कार्यों में दखल नहीं देता है! वह तटस्थ होकर देखता रहता है-

तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्यो अभि चाक शीति।

ऋ. 1.164.20

फिर हाकिंग का कहना है कि फैलती हुई सृष्टि एक निर्माता को अलग नहीं करती परन्तु उस पर एक पाबन्दी लगा देती है कि सृष्टि कब उत्पन्न हुई!

अब हम अन्य वैज्ञानिकों के मतों पर भी विचार करते हैं। जान क्वीवलैण्ड कोथरान लिखते हैं, 'यह भौतिक प्रपञ्च अपनी रचना अथवा अपने नियमों की रचना अपने आप नहीं कर सकता है। इसलिए सृष्टि रचना का यह कार्य किसी अभौतिक माध्यम के द्वारा ही होना चाहिए। इस कार्य में जो विशाल चमत्कार दृष्टिगोचर होते हैं उनसे यह पता लग जाता है कि उस माध्यम में सर्वोत्कृष्ट बुद्धि होनी चाहिए जो केवल चेतना का गुण है।.....इसका अर्थ यह है कि बिना किसी संकोच के हम सर्वोच्च आत्म तत्व ब्रह्म, विश्व के रचयिता और नियामक, के अस्तित्व के तथ्य को स्वीकार करते हैं।'

आइसोटोप विशेषज्ञ डा. पाल क्लेरेन्स लिखते हैं, 'किसी भी दृष्टि से परमात्मा भौतिक पदार्थ नहीं है। यह कारण है कि भौतिक ढंग से उसकी व्याख्या करना मानव क्षमता के बाहर है।.....जो एक बात हम जानते हैं वह यह है कि मानव और यह विश्व सर्वथा नास्ति से अस्ति में नहीं आ गया है। ये दोनों सादि हैं और उनका एक आदि रचयिता भी होना चाहिए।'

डा. जार्च अर्ल डेविस लिखते हैं, कोई भी जड़ पदार्थ अपने आपको उत्पन्न नहीं कर सकता है।....मैं ऐसे परमात्मा के विषय में विचार करना पसंद करता हूँ जिसने इस चराचर जगत् को उत्पन्न तो किया है परन्तु वह स्वयं यह जगत् नहीं है।...कोई सृजन जितने ऊँचे परिणामवादी विकास की ओर ले जाता है उस सृजन के पीछे सर्वोच्च बुद्धि की उत्पत्ति ही प्रबल साक्षी होती है। वे ईश्वर को जगत् का निमित कारण मानते हैं जो वेदों के अनुरूप ही है।

डा. जान इडोल्फ ब्यूलर व्याख्याता एण्डरसन महाविद्यालय लिखते हैं, प्रकृति के नियमों को पैदा करने में कभी समर्थ नहीं हो सकता है। परमात्मा नियम प्रदान करता है मनुष्य उन नियमों की खोज करता है और धीरे-धीरे प्रकृति की व्याख्या करना सीखता है। (शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

ऋषि सम्मत धर्म से ही राष्ट्र का उत्थान होगा

प्राणी जगत् में यदि कोई सर्वश्रेष्ठ प्राणी है तो वह है- मनुष्य। मानव जीवन सर्व शक्तियों का केन्द्र तथा सर्व सुखों का स्रोत है। यह आत्मा मानव जीवन को प्राप्त करके ही उन्नति की चरम सीमा तथा अपने अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। आत्मा के अन्दर जो महान दिव्य शक्तियां निहित हैं उनका विकास इसी मानव जीवन में होना सम्भव है। यह मानव जीवन ही अपने चरम उत्कर्ष द्वारा स्वयं भी अपने जीवन को सुखमय बना सकता है और विश्व को भी सुख शांति का सन्देश सुना सकता है तथा देश, जाति और राष्ट्र का उत्थान कर सकता है। परन्तु मनुष्य राष्ट्र का उत्थान और उसे सुखी तभी बना सकता है जबकि वह पहले स्वयं अपना उत्थान कर ले।

मानव जीवन में उत्थान और उसे सुखमय बनाने का यदि कोई सर्वोत्तम साधन है तो वह है धर्म। धर्म वह शीतल जल है जो इस मानव जीवन रूपी वृक्ष को हरा-भरा रखता है तथा उसे पुष्पित तथा फलित बना देता है जिस के मधुर तथा स्वादिष्ट फलों का आस्वादन कर वह स्वयं भी सुख पाता है और अपने मधुर तथा स्वादिष्ट फलों द्वारा राष्ट्र को भी सुखमय बना देता है। इसके विपरीत धर्महीन मानव जीवन नीरस और फीका है। स्वयं सुख शांति को प्राप्त करना तथा विश्व में सुख शांति का साम्राज्य करना मानव जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। किन्तु यह लक्ष्य तभी पूर्ण हो सकता है जबकि वह धर्म परायण बने। धर्म मनुष्य को विलासितामय जीवन से हटाकर उसे संयमी और सदाचारी बना देता है। परन्तु आज सभी विलासमय जीवन बिताकर धर्म को भूलते जा रहे हैं। इस धर्म विमुखता के मुख्य रूप से दो कारण हैं एक सदाचार का न होना और दूसरा धर्म के वास्तविक स्वरूप को न समझना। आज जहां सदाचार से रहित जीवन मनुष्य को धर्मपरायण नहीं होने देता वहां धर्म के वास्तविक स्वरूप को न समझने के कारण मनुष्य धर्म से दूर होता जा रहा है। आज लोगों ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को न समझ कर वर्त्तमान में प्रचलित समुदायों, और मजहबों को ही धर्म समझ लिया है। जब मनुष्य इस समुदायों द्वारा प्रचलित नाना प्रकार के आड़म्बरों और देश तथा समाज की उन्नति में बाधक फिर रूढ़ी रिवाजों तथा कुप्रथाओं को देखता है तो धर्म से उदास हो जाता है। इन्हीं सम्प्रदायों, मजहबों तथा समुदायों को आज के राजनेताओं ने धर्म समझ कर अपने आपको धर्म निरपेक्ष घोषित कर दिया है।

किन्तु आज इस धर्म निरपेक्षता के जो भयंकर परिणाम हमारे सामने आ रहे हैं उन्हें देख तथा सुनकर आदमी हैरान हो जाता है। आज छोटे से लेकर बड़े शासक वर्ग में जो अनाचार, दुराचार तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला हो रहा है, वह इस धर्म निरपेक्षता का ही दुष्परिणाम है। धर्म के नाम पर आज जो आड़म्बर दिखाई देता है उसे देखकर कोई भी व्यक्ति धर्म से घृणा कर सकता है। वास्तव में धर्म वह है जिस को धारण करके देश, जाति, समाज तथा व्यक्ति सब प्रकार से समुन्नत हो। महाभारत में कहा है-

धर्मो धारयते प्रजा

अर्थात् प्रजाओं का धारण धर्म ही करता है। धर्म ही उसे सत्पथगामी बनाता है। ऋषि दयानन्द अपनी प्रसिद्ध पुस्तक संस्कार विधि में इसी धर्म के यथार्थ स्वरूप का निम्न मार्मिक शब्दों में वर्णन करते हैं-

किसी से वैर वृद्धि करके अनिष्ट करने में कभी न वर्तना सुख, दुख हानि लाभ में व्याकुल होकर कभी कर्त्तव्य को न छोड़ना। धैर्य पूर्वक अपने कर्त्तव्य में स्थिर रहना, निन्दा, स्तुति, मान, अपमान का सहन करना। मन को सदा अधर्माचरण से हटा कर धर्माचरण में ही प्रवृत्त रखना। मन, कर्म, वचन से अन्याय और अधर्म के द्वारा किसी वस्तु का स्वीकार न करना। राग, द्वेष आदि के परित्याग से आत्मा और मन को पवित्र और जलादि से शरीर को शुद्ध रखना। श्रोत्र आदि इन्द्रियों को अकर्त्तव्य से हटा कर्त्तव्य कर्मों में सदा प्रवृत्त रखना। वेदादि सत्य विद्या ब्रह्मचर्य, सत्संग करने और कुसंग दुर्व्यसन, मद्यपानादि के परित्याग से बुद्धि को सदा निर्मल बनाना। सत्य जानना, सत्य बोलना, सत्य कहना क्रोध आदि दोषों का परित्याग कर शान्ति आदि गुणों को धारण करना ही धर्म कहलाता है।

ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित धर्म के इन सिद्धान्तों का पालन करने से संसार की उन्नति हो सकती है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के नियम में लिखा कि सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए। सत्य आचरण करना और उसी के अनुसार अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही धर्म है। सत्य को छोड़कर मनुष्य धार्मिक होने का दिखावा तो कर सकता है परन्तु धार्मिक नहीं बन सकता। इसलिए हम अपने जीवन में सत्य का कभी त्याग न करें। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित धर्म के सिद्धान्तों का पालन कर कोई भी राष्ट्र उन्नति कर सकता है क्योंकि ये सिद्धान्त निष्पक्ष तथा सार्वभौम है। ये नियम किसी एक के लिए नहीं अपितु प्राणी मात्र के लिए हैं। इसलिए यदि हम राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहते हैं तो धर्म के इन शाश्वत नियमों को धारण करना होगा तभी राष्ट्र की उन्नति सम्भव है।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज और वेदप्रचार

-ले० डॉ० महेश विद्यालंकार

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" ऐसा क्रान्तिकारी उद्घोष ऋषि दयानन्द से पूर्व किसी ने नहीं किया। वर्तमान में इतने शंकराचार्य, पंथ, सम्प्रदाय, महन्त आदि हैं कोई भी वेदों के प्रति ऐसी, मान्यता व धारणा नहीं रखते हैं। ऋषि को महत्त्वपूर्ण विशेषता व देन है-वेदों की ओर लौटो, मेरी नहीं वेदों की मानो। वेद आज्ञा ही आज के भूले, भटके, अशान्ति, संघर्ष, हिंसा, भ्रष्टाचार अनाचार आदि में लिप्त मानव-समाज को सच्चे सुख: शान्ति प्रसन्नता, नीरोगता, विश्वशान्ति, विश्वबंधुत्व और विश्वमानवता का मार्ग दिखा सकता है। वेदज्ञान सार्वभौमिक, सार्वकालिक सार्वदेशिक तथा सार्वजनिक है। वेद परमात्मा का आदेश, उपदेश और सन्देश है। वेदज्ञान इस देश की अद्वितीय सम्पदा है।

आर्य समाज ऋषि दयानन्द का जीवित-जाग्रत स्मारक और उत्तराधिकारी है। स्वामी जी के अधूरे स्वप्नों व कार्यों की पूर्ति की जिम्मेदारी आर्य संगठनों, सभाओं, संस्थाओं एवं आर्यसमाज की है। कोई संस्था, संगठन व महापुरुष अमर व जीवित विचारों और सिद्धान्तों से रहता है। ऋषि स्वयं में सिद्धान्त व विचार थे। वेद प्रचार आर्यसमाज को विरासत, वसीयत एवं परम्परा में मिला है। आर्यो! ऋषि का अमर सन्देश गूँज रहा है-वेद-वेद-वेद-वेद करो, वेदानुकूल जीवन जीओ, वेद ज्ञान जन-जन तक पहुंचाओ जितना वेद ज्ञान का प्रचार प्रसार होगा, उतना संसार से अज्ञान, जड़ता, पशुता, ढोंग-पाखण्ड आदि दूर होंगे। सच्चे अर्थ में मानव, मानव बन सकेगा। वेदों का जीवन-दर्शन जगत को सीधा सच्चा एवं सरल मार्ग दिखाता है। आर्यसमाज का मुख्य एजेण्डा वेद प्रचार है, वेद प्रचार घटने के कारण ही, आज अन्धविश्वास ढोंग-पाखण्ड, जड़पूजा, गुरुवाद आदि बढ़ रहा है। धर्म भक्ति और परमात्मा बाजार-व्यापार बन रहे हैं। धर्म के नाम पर अधर्म फैल रहा है। जो आज धार्मिक क्षेत्र में अन्धकार व पाखण्ड़ फैल रहा है, उसमें आर्य समाज प्रकाशस्तम्भ की भूमिका निभा सकता है। कभी आर्य समाज जागते रहो, जागते रहो, की भूमिका में था। आर्य समाज का अतीत अत्यन्त प्रेरक उज्ज्वल, अनुकरणीय स्मरणीय एवं वन्दनीय रहा है। जितना गर्व-गौरव करें, थोड़ा है। वर्तमान अत्यन्त चिन्तनीय विचारणीय हो रहा है। सर्वत्र मूल में भूल हो रही हैं। दैनिक, साप्ताहिक, वार्षिकोत्सवों, यज्ञ कथा आदि में उपस्थिति चिन्तनीय हो रही है। उत्सवों पर लोगों को लंगर का प्रलोभन दिखाकर लंगर भीड़ जुटाई जा रही है। पुराने विद्वान्, वक्ता, संन्यासी, भजनोपदेशक, कार्यकर्त्ता, सदस्य अधिकारी आदि जा रहे हैं, उस तीव्रता से नये लोग नहीं आ रहे हैं। पहले भवन कच्चे होते थे, लोग विचारों, सिद्धान्तों, आदर्शों और आचरण से पक्के होते थे। आज उल्टा हो रहा है। भवन पक्के बन रहे हैं लोग जीवन व आचरण से कमजोर हो रहे हैं। तेज़ी से आर्यसमाज अपने मूल सिद्धान्तों, उद्देश्यों, आदर्शों, विचारों से हट कर व भटक रहा है। आज आर्यसमाज के पास भवनों, स्कूलों, संस्थाओं संगठनों आदि की भौतिक सम्पदा अरबों में है। बाहर का कलेवर लम्बा-चौड़ा है, मगर आन्तरिक दृष्टि से स्थिति गंभीर व शोचनीय है। जो हमें लड़ाई संघर्ष विवाद, अज्ञान, अशिक्षा, ढ़ोंग-पाखण्ड आदि के विरोध में लड़नी चाहिए थी, वह आपस में भी लड़ पड़े। आर्यसमाज को बाहर से किसी ने कमजोर नहीं किया, वह अपनों से ही कमजोर हो रहा है। आपसी स्वार्थ, अहंकार के कारण विवाद व संघर्ष हैं। उसके मूल में एक मजबूत कारण यह भी है कि हमारे जीवन, विचारों व आचरण में धार्मिकता, अध्यात्मिकता, नैतिकता, तप, त्याग, सेवाभाव आदि की कमी हो रही है, ये बातें जीवन को संभालती व सन्तुलित रखती है। सन्धया व यज्ञ धार्मिक जीवन के आधार हैं। ऋषि का जीवन कह रहा है-भक्ति से शक्ति मिलती है। उन्होंने ईश्वरोपसना कभी नहीं छोड़ी। जो हमारे यज्ञ, कथा, सत्संग, कार्यक्रमों में सात्विकता धार्मिकता, स्वच्छता, शान्तिमय वातावरण, प्रेरक प्रभाव आदि होना चाहिए, उसका तेज़ी से अभाव हो रहा है। हमें दूसरों से सीखना चाहिए। आज हमारे कार्यक्रम जलसा, जलूस, लंगर फोटो, माला, स्वागत, सम्मान, भाषण, प्रस्ताव योजनाओं आदि तक सीमित हो रहे हैं। क्रियात्मक व प्रेरक जीवन से दूर हो रहे हैं। जो आर्यसमाज कभी दूसरों की शुद्धि करता था, आज उसे सच्चाई व ईमानदारी से अपनी शुद्धि की जरूरत है। आर्यसमाज की भ्रष्ट, स्वार्थ पदलिप्सा, अहंकार आदि की राजनीति ऋषि के मिशन को खोखला, जर्जरित, कमजोर तथा प्रभावहीन बना रही है। भावनाशील ऋषिभक्त, आर्य विचारधारा, प्रेमी, और समाज हितैषी लोग अन्दर से दुखी, बैचेन और आहत हैं, उनकी न कोई सुनता है और न मानता है।

वेद प्रचार जनता से जुड़ने, उन तक पहुँचने और सन्मार्ग दिखाने का उत्तम मार्ग है। आर्यसमाज के पास भौतिक, अद्वितीय सम्पदा-वैचारिक चिन्तन और मान्यताएं हैं। आज भी आर्य समाज सर्वोत्तम विचारधारा का धनी है। आज संसार सुविचारों के अभाव से जीवन व जगत को नरक बनाकर जी रहा है। आर्य समाज का जो जीवन-दर्शन है, वह हमें इहलोक और परमार्थ की सुखद-विचार दृष्टि देता है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व निर्माण उसका अन्तिम लक्ष्य रहा है। आज आर्यसमाज जनता से कट व हट रहा रहा है-आज युग मीडिया, विज्ञापन व प्रचार है। दुर्भाग्य है कि आज तक आर्य समाज अपना वैदिक चैनल नहीं बना सका है, जब कि हम महासम्मेलनों पर करोड़ों रुपये कुछ समय के लिए खर्च कर देते हैं। उतने में रचनात्मक प्रेरक उपदेशक विद्यालय व गुरुकुल चल सकता है। जो कि स्थायी निर्माण का कार्य है। जिनके पास सिद्धान्त, विचार, आदर्श, जीवनमूल्य, सत्यज्ञान और संस्कृत-संस्कृति बोध नहीं है वे मीडिया, चैनलो, सार्वजनिक मंचो पर छा रहे हैं। आर्यसमाज के पास, वेदज्ञान, ऋषि परम्परा, यज्ञ, प्रेरक सात्विक, आध्यात्मिक भक्तिपूर्ण भजन, योग का सत्य स्वरूप आदि है, उनके द्वारा जनता को बुलाया व जोड़ा जा सकता है। आज हम आर्य विचारधारा, और ऋषि को आम आदमी व युवापीढ़ी तक नहीं पहुंचा पा रहे हैं। पौराणिकों ने रामचरित मानस और हनुमान चालीसा को घर-घर तक पहुंचा दिया, सभी पढ़ व सुन रहे हैं, आर्यसमाज वेदों को सरल भाव में घर-घर तक नहीं पहुंचा सका है। उस विलय पर गंभीरता से सोचने व कदम उठाने की जरूरत है। वेद की ज्योति ज़लती रहे, नारे से काम नहीं चलेगा। आज हम देश, काल, समय के अनुसार विद्वानों, पुरोहितों, भजनोपदेशकों, प्रचारकों, संन्यासियों आदि को तैयार नहीं कर पा रहे हैं। आर्य समाज के पास युवकों को जोड़ने वाली प्रेरक संस्थाएं नहीं हैं जो आधुनिक समयानुसार उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर सकें। आज की युवापीढ़ी भटकन अन्धविश्वास व अज्ञान में फँस रही हैं वह सत्य व शान्ति चाहती है। वह ढ़ोंग-पाखण्ड़ आडम्बर, गुरु, महन्तों, सन्तों आदि से तंग हो रही है। आर्य समाज के पास सद्ज्ञान विचार प्रेरणा व जीवनदर्शन है, किन्तु परन्तु..... लेकिन हमें कहना आता है, करना नहीं आता युवापीढ़ी, भाषण नहीं आचरण देखती है। आर्य समाज को अपने स्वरूप को संभालने तथा पुनर्मूल्याकंन की जरूरत है वर्तमान जीवन जगत की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान वैदिक जीवन-दर्शन में है। अत: आर्यो उठो! जागो! सोचो! विचारो! करो यह समय विवाद का नहीं संवाद का है। चिन्ता नहीं चिन्तन करो जिन उद्देश्यों, आदर्शों व सिद्धान्तं के लिए ऋषिवर ने आर्य समाज बनाया था, उन्हें समझो पढ़ो और आगे बढ़ाओ। यही वेदप्रचार है।

www.thearyasamaj.org

प्रभु स्मरण के सात लाभ होते हैं

-ले० डा. अशोक आर्य, कौशाम्बी गाजियाबाद

परमपिता परमात्मा हम सब का जन्मदाता है वही हम सब का पालन करता है, वही हम सब का पोषण करता है तथा वह प्रभु ही हम सब का संहार अर्थात मोक्षदाता है। भाव यह है कि हमारे जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत हमारा सब कुछ करने वाला वह प्रभु ही है। हम उसके आदेश के एक कदम भी अलग से नहीं चल सकते। जब हम उस प्रभु के आदेश के बिना कुछ भी नहीं कर सकते तो हमारे भी उस प्रभु के प्रति कुछ कर्त्तव्य बनते हैं। इन कर्तव्यों का पालन नहीं करते तो हम प्रभु के पुत्र कहलाने का अधिकार भी नहीं रखते। इन कर्तव्यों में प्रभु की स्तुति करना, प्रभु की प्रार्थना करना तथा प्रभु की उपासना करना मुख्य हैं। प्रभु स्तुति के अनेक प्रकार हैं, जिन में से सात प्रकार की स्तुति अथवा स्तुति से होने वाले सात प्रकार के लाभ का वर्णन सामवेद के मन्त्र संख्या 45 में इस प्रकार किया गया है। :-

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे।
प्रियं सतिष्ठमरतिन स्वध्वरं विश्वस्य दुतममृतम॥
सामवेद 45॥

मन्त्र में कहा गया है कि हे प्रभो? आप अग्नि के समान सब को आगे ले जाने वाले हैं। मैं आप को नम्रता से पुकारता हूँ क्योंकि प्रभु की आराधना नम्रता से ही संभव है। ज्ञान, धन व बल का गर्व करने वाला व्यक्ति कभी भी उस परमपिता परमात्मा का सच्चा आराधक नहीं बन सकता। प्रभु का आराधक बनाने के लिए गर्व को छोड़कर नम्रता को ग्रहण करना होगा। अन्यथा हम केवल भटकते रहेंगे, प्रभु से नहीं मिल सकेंगे।

जब हम परमपिता परमात्मा की इस प्रकार की आराधना करते हैं तो हमें प्रभु के कुछ विशेषणों के रूप में कुछ लाभ प्राप्त होते हैं। मन्त्र में इस प्रकार के लाभों की संख्या सात बतायी गयी है। जो इस प्रकार है:-

1. आराधक में शक्ति का प्रवाह निरंतर चलता है :-

जिस प्रभु ने हमें इस संसार में भेजा है, वह प्रभु शक्ति को कभी गिरने नहीं देता, नष्ट नहीं होने देता। जब मनुष्य उस प्रभु से संपर्क करता है, उसकी आराधना करता है, उसकी स्तुति, उपासना करता है तो मनुष्य का संपर्क शक्ति के स्त्रोत उस प्रभु से जुड़ जाता है, जुड़ता ही नहीं उससे यह संपर्क निरंतर बना रहता है। जिस से किसी का संपर्क होता है, उसमें जैसी शक्तियां होती हैं, वैसी ही शक्तियां (जो बुरी भी हो सकती हैं तथा लाभकारी भी) उपासक को मिलती हैं। इस प्रकार जब मानव प्रभु की आराधना करता है, उसके संपर्क में आता है तो जिस प्रकार की शक्तियां उस प्रभु में होती हैं, वैसी ही ईश्वरीय शक्तियां का प्रवाह मानव में हो जाता है।

2. आराधक का मन सदा प्रसन्न रहता है :-

ऊपर बताया गया है कि प्रभु आराधना से ईश्वरीय शक्तियां मिलती है। ईश्वरीय शक्तियों को पा कर मानव अपने आप को धन्य समझता है तथा प्रसन्नता से भाव विभोर हो उठता है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रभु आराधक सदा प्रसन्न रहता है। यह तो सब जानते ही हैं कि प्रसन्न व्यक्ति सदा स्वस्थ रहता है तथा धन धान्य से उसके कोष सदा भरे रहते हैं। इससे उसकी प्रसन्नता और भी बढ़ती है।

3. आराधक को उत्कृष्ट ज्ञान मिलता है :-

परमपिता परमात्मा सब प्रकार के ज्ञान का आदि स्त्रोत होता है। जब हम परमपिता की प्रार्थना, उपासना पूर्वक स्तुति करते हैं तो वह प्रभु हमें अपनी गोदी में स्थान देकर हमें उत्तम ज्ञान देता है। इस प्रकार प्रभु आराधक को उत्तम से उत्तम ज्ञान देता है।

4. आराधक को ब्रह्मानंद मिलता है :-

प्रभु भक्ति से आराधक को ब्रह्मानंद की प्राप्ति होती है। जब प्रभु भक्त अपनी आराधना के बल से प्रभु के साथ साक्षात्कार कर लेता है, प्रभु का साथ उसे मिल जाता है तो उसे असीम आनंद की अनुभूति होती है। अब उसके लिए प्रभु भक्ति के आनंद के सामने अन्य सब प्रकार के आनंद फीके दिखाई देते हैं। यही कारण है कि अब वह विषयों की ओर आकर्षित नहीं होता। ब्रह्मानंद के सामने उसे अन्य सब आनंद तुच्छ दिखाई देते हैं। अतः वह विषयों से मिलने वाले रस से प्रीति को समाप्त कर ब्रह्मानंद में लीन होने का यत्न करता है क्योंकि अब उसे विषयों से मिलने वाला आनंद ब्रह्मानंद की प्रतिस्पर्धा में कुछ भी दिखाई नहीं देता।

5. आराधक सदा उत्तम कर्मों में लग जाता है :-

जब आराधक को ब्रह्मानंद की प्राप्ति हो जाती है तो उसे किसी पर हिंसा करने की आवश्यकता नहीं रहती, सब कुछ उसे उस प्रभु की शरण मात्र से ही मिल जाता है। अतः वह हिंसा रहित हो कर उत्तमोत्तम कर्मों में लीन हो जाता है। इससे संसार का उपकार होता है तथा उसे और भी अधिक प्रसन्नता तथा आनंद मिलता है।

6. आराधक के पास असुर प्रवृतियां नहीं आतीं :-

मानव की शरीर रूपी देवनगरी में जब आराधक की तपश्चर्या से देवगण इस नगरी के अन्दर घुस कर इसे सप्त-ऋषियों का आश्रम बना देते हैं तो असुर प्रवृतियाँ बलात रूप से इस में घुस नहीं सकतीं क्योंकि असुर प्रवृतियों का उत्पादक प्रभु उन्हें सदा इस देवग्रह से दूर भगाता है, उन्हें पास नहीं आने देता, अन्दर घुसने देने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। तभी तो सातवें लाभ के रूप में प्रभु आराधक को सब से बड़ा विजेता कहा गया है।

7. आराधक सब से बड़ा विजेता होता है :-

परमपिता परमात्मा मोक्ष का साधक होता है। वह अपने भक्तों को जन्म मरण के बंधनों से मुक्त कर मोक्ष में ले जाता है। इस प्रकार यह आराधक मृत्यु के भय से सदा के लिए मुक्त हो जाता है। यह जो मुक्ति का मार्ग है, यह प्रभु आराधना से ही प्राप्त होता है। हम ऊपर बता चुके हैं कि प्रभु की आराधना नम्रता से होती है, अभिमान से नहीं। नम्रता से अभिमानादि दुष्ट वृतियों को पूर्णतया अपने वश में कर लेने से प्राप्त होती है। हम मन्त्र की भावना को तब ही आत्मसात कर यह सात लाभ पा सकते हैं जब हम नम्रता को ग्रहण कर स्वयं पर विजेता बनकर प्रभु आराधना में नम्रता के साथ निराभिमान हो कर जुटे रहेंगे। शत्रुओं पर तो अनेक लोग विजय कर लेते हैं किन्तु अपने आप पर विजय कोई ही पा सकता है, जो अपने आप पर विजय पा लेता है, वह सब से बड़ा विजेता होता है। यह विजय प्रभु आराधना से ही संभव होती है।

अतः आओ हम प्रभु भक्ति के इन सात लाभों से साक्षात्कार करने के लिए सप्तऋषियों को पाने के लिए तथा प्रभु शरण के अधिकारी बनने के लिए नम्रता पूर्वक प्रभु की आराधना करें।

www.thearyasamaj.org

उठो भारत की आशा

-ले० विद्यासागर शास्त्री, आदर्शनगर 533/11 कैथल

उठो-उठो भारत की आशा, भारत का नव निर्माण करो।
प्रात: प्रभा-उत्साह लिए, भारत में नव प्राण भरो।
नव्य सूर्य की दिव्य प्रभा से, दिव्यज्ञान की ज्योति जलाते।
जन जन को तुम सबल बनाते, राष्ट्रभक्ति की ज्योति जलाते।
देश प्रेम की तान सुनाते, जागृत उनमें प्राण भरी।
उठो-उठो भारत की आशा, भारत का नव निर्माण करो।
उठो हिन्द की भावी आशा, सबल करो में ध्वज लहराते।
मुख से जय-जय भारत! गाते, जन-जन में तुम प्रेम जगाते।
नवल क्रान्ति का बिगुल बजाते, जागृत क्रान्ति गान करो।
उठो-उठो भारत की आशा, भारत का नव निर्माण करो।
रणभेरी का नाद बजाते, शहीदों की याद दिलाते।
उनके समजोश जगाते, देश हेतु सर्वस्व लुटाते।
शहीद, रक्त की कसम दिलाते, जागृत अपनी शान करो।
उठो-उठो भारत की आशा, भारत का नव निर्माण करो।

आर्य समाज संगरूर में चतुर्वेद शतकम महायज्ञ सम्पन्न

दिनांक 14 नवम्बर वीरवार से 17 नवम्बर 2013 रविवार तक आर्य समाज संगरूर में चतुर्वेद शतकम महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। 14 नवम्बर से 16 नवम्बर तक प्रतिदिन प्रात: 6.30 बजे से 9.00 बजे तक यज्ञ, भजन एवं प्रवचन जिस में वैदिक विद्वान आचार्य रामफल सिंह आर्य अग्निहोत्री के प्रवचन और प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री भीषम आर्य बिजनौर के मधुर भजन हुये इसी तरह रात्रि 8.00 बजे से 10.30 बजे तक भजन एवं प्रवचन होते रहे। इस चतुर्वेद शतकम महायज्ञ में संगरूर की आर्य जनता ने भारी संख्या में भाग लिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये प्रधान श्री जगन्नाथ गोयल, कोषाध्यक्ष डा. अमरनाथ गोयल, संयोजक महाशय वीरेन्द्र कुमार सह संयोजक हरबंस लाल जिन्दल, श्रीमती कमलेश रानी प्रधाना स्त्री आर्य समाज, श्रीमती पूनम आर्या मंत्राणी स्त्री आर्य समाज ने भारी योगदान दिया।

-राधेश्याम गांधी मंत्री आर्य समाज संगरूर

ऋषि निर्वाण दिवस मनाया

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना के हाल में ऋषि निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें स्कूल के स्टाफ और विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। हवन यज्ञ श्री हर्ष आर्य जी ने विधि विधान से करवाया व सबको हवन से होने वाले फायदों के बारे में विस्तार से बताया। इसके पश्चात श्रीमती किरण जी ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किया और बच्चों ने भी मधुर भजन सुनाए। इस अवसर पर स्कूल की प्रबन्ध समिति के सदस्यों रमाकांत महाजन जी ने बच्चों को उपदेश दिया कि दीवाली के दिन मन में प्रकाश व ज्ञान का दीया जला कर अज्ञान को दूर करके दीवाली मनानी चाहिये। इस अवसर पर रमेश महाजन जी, श्री वजीर चंद जी, हर्ष आर्य जी कमेटी सदस्य भी उपस्थित थे। शुभलता जी ने बच्चों को आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर स्कूल में बच्चों की भाषण प्रतियोगिता भी करवाई गई जिसमें प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को पारितोषिक दिये गये। शान्ति पाठ के पश्चात यज्ञ शेष बांटा गया।

-सुनीता मलिक प्रिंसीपल

पृष्ठ 2 का शेष- 'ईश्वर' वेद.....

वह प्रत्येक नियम जिसकी मनुष्य खोज करता है और धीरे-धीरे प्रकृति की व्याख्या करना सीखता है। वह प्रत्येक नियम जिसकी मनुष्य खोज करता है मनुष्य को परमात्मा को समझने के और निकट ले जाता है। परमात्मा हम पर अपने आपको प्रकट करने के लिए यही तरीका अपनाता है। अपने आपको प्रकट करने का केवल यही तरीका नहीं है किन्तु यह महत्वपूर्ण है। अनुभूति के आधार पर परमेश्वर की सत्ता की स्वीकृति भी वैसी ही है जैसी कि परमाणु की रचना की स्वीकृति।

हम में से किसी ने भी किसी भी तत्व के परमाणु को नहीं देखा है। परमाणु के अन्दर के सूक्ष्म कणों और उतने ही उनके विलोम कणों का भी हमने दर्शन नहीं किया है फिर भी वैज्ञानिकों के कथन को स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि वे उस विषय के पण्डित हैं। इसी प्रकार डाक्टर जब मस्तिष्क में न्यूरोन्स के कार्यों का वर्णन करते हैं तो हम उसे भी स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि डाक्टर ने कहा है। इसको ध्यान में रखकर डा. मार्टिन ग्रान्ट स्मिथ लिखते हैं, हर एक युग के साक्षर अथवा निरक्षर जिसमें वैज्ञानिक भी सम्मिलित हैं। उन लाखों लोगों की साक्षी है कि हमने अपनी आत्मा में ईश्वर की सत्ता का अनुभव किया है। हम उस साक्षी का क्या करें ? क्या उसे परे फेंक दे ? उनकी अपेक्षा कर दें।

अब हम चार अन्य अत्यन्त प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के विचार पाठकों के सम्मुख रखकर विषय को विराम देना चाहते हैं। These things being rightly despatched does it not appear from phenomena that there is a supreme Being in comporal living intelligent omnipresent who in infinite space sees the things theemselves intimately and thoroughtly perceives them and com-prechends them, wholly by their immediate presence to himself.

(Optics by Sir Newton page 344)

सर ओलिवर लाज अपने समय में बड़े वैज्ञानिक थे। वे British Royal Society के प्रधान थे। उन्होंने एक निबन्ध में लिखा है- We are deaf and dumb to the infinite grandeur around us unless we have insight to appriciate the whole and so to reccgnise in the woven fabric of existence flowing steadily from the loom in an infinite progress towards perfection the evergrowing garment of a transendent God.

अर्थात् हम अपने चारों और जो असीम सौन्दर्य देख पाते हैं उसके विषय में बेहरे और गूंगे रहते हैं जब तक कि हमारे अन्दर समस्त जगत् के महत्व को समझने और उसके अन्दर ओत प्रोत सर्वव्यापक परमेश्वर की सत्ता को स्वीकार करने की आन्तरिक बुद्धि और दृष्टि न हो।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक लुई पाश्चर का प्रात: स्मरणीय वाक्य है-

'Posterity will one day laugh at the foolishness of the modern materialistic philosothers. The more I study nature, the more I stand amused at the works of the creator.'

अन्त में अब हम आइन्सीटन के लेख का उद्धारण देते हैं- 'I belive in God who reveals himself in the orderly harmony of the universe. I bealieve that intelligence in manifasted through out all nature. The basis of all scientific work is the conviction that the world is an ordered and comprehensive entity and not a thing of chance.' (Science and the idea of God by W.M. Ernest Hacking)

'अर्थात् मैं ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता हूँ जो अपने को जगत् की व्यवस्थित सत्ता के रूप में प्रकट कर रहा है। मैं यह विश्वास रखता हूँ कि सारी प्रकृति के अन्दर एक बुद्धि मत्ता प्रकट हो रही है। सारे वैज्ञानिक कार्य का आधार यह विश्वास ही है कि संसार एक व्यवस्थित सत्ता है न कि आकस्मिक वस्तु।' पाठक इसे छोटे से लेख से अनुभव करेंगे। कि ईश्वर के विषय में वेद और विज्ञान के दृष्टि कोण में बड़ी समानता है। इति।

शोक समाचार

आर्य समाज मोहाली के पूर्व प्रधान स्वर्गीय विधिचंद जी मिन्हास की धर्मपत्नी श्रीमती केसरी देवी मिन्हास का गत दिनों नादौन जिला हमीरपुर में देहावासन हो गया। श्रीमती मिन्हास की आयु लगभग 83 वर्ष के करीब थी। उनका अन्तिम शोक दिवस 1 नवम्बर 2013 को नादौन जिला हमीरपुर में हुआ। हम परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना करते हैं।

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की बड़ी बहन श्रीमती सरला शर्मा जी का 19-11-2013 को दिल्ली में देहान्त हो गया था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं द्वारा उनकी आत्मिक शांति के लिए शोक सभा का आयोजन किया तथा परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति के प्रार्थना की गई कि परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में आश्रय प्रदान करें तथा इस परिवार को यह असहनीय दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। जिन-जिन संस्थाओं की ओर से शोक संवेदना प्रकट की गई उनके नाम इस प्रकार हैं-आर्य समाज नवांशहर, डा. आशानन्द आर्य मा.सी.सै. स्कूल नवांशहर, आर. के. आर्य कॉलेज नवांशहर, डी.ए.एन. आर्ट एण्ड क्राफ्ट कॉलेज नवांशहर, आर्य कन्या सी. सै. स्कूल बस्ती नौ जालन्धर, आर्य सी.सै. स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर, बी.एल. एम. कॉलेज नवांशहर, डब्ल्यू.एल. आर्य कन्या सी.सै. स्कूल नवांशहर, डी.ए.एन. कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर गर्ल्ज नवांशहर, आर्य कॉलेज लुधियाना, आर्य कन्या सी.सै. स्कूल पुराना बाजार लुधियाना, आर्य सी.सै. स्कूल लुधियाना, डी.एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन मोगा, श्रीराम आर्य सी. सै. स्कूल पटियाला, आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल पटियाला।

गौहत्या किसी गहरे षड्यंत्र की आहट: स्वतंत्र कुमार

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने की कड़े शब्दों से निन्दा

गत दिनों पठानकोट में गौ हत्या से क्षुब्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामंत्री प्रो. स्वतंत्र कुमार मुरगई ने इसकी कड़े शब्दों में निंदा करते हुये इसे किसी गहरे षड्यंत्र की आहट बताया है। उन्होंने कहा कि इससे समस्त लोगों की भावनाएं आहत हुई है। उन्होंने कहा कि यह कुकृत्य कर किसी ने भाईचारे में दरार डालने का प्रयास किया है जिसे आर्य समाज कदापि बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि पठानकोट के सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं की समझदारी के चलते शरारती तत्वों के मंसूबे कामयाब नहीं हुए हैं।

इसी बीच लगातार हो रही गौ हत्याओं से भड़के शहर के आर्य समाज के संगठनों, सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों ने पुलिस व जिला प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी कर भारी रोष जताया। इस दौरान विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने पुलिस व प्रशासन के खिलाफ प्रदर्शन किया। उल्लेखनीय है कि पठानकोट के आसपास क्षेत्रों में पिछले कई दिनों से शरारती तत्व गौ हत्या कर माहौल खराब करने का प्रयास कर रहे हैं।

दूसरी ओर आर्य जगत ने प्रशासन को आड़े हाथों लेते हुये कहा कि प्रशासन मूकदर्शक बना हुआ है। उन्होंने कहा कि शरारती तत्वों को तुरन्त बेनकाब कर लोगों के सामने लाया जायेगा। इस सम्बन्ध में आर्य समाज का एक शिष्टमंडल श्री स्वतंत्र कुमार जी के नेतृत्व में जिलाधीश एवं अन्य उच्च अधिकारियों से मिला और उनसे माहौल खराब करने वाले शरारती तत्वों से सख्ती से निपटने का आग्रह किया। उन्होंने प्रशासन को चेतावनी दी कि शीघ्र ही उक्त घृणित कांड करने वाले अपराधियों को पकड़ कर कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जाये ताकि शहर में शांति का माहौल बना रहे अन्यथा आर्य जगत को सड़कों पर आना पड़ेगा जिसकी सारी जिम्मेदारी जिला प्रशासन व अधिकारियों की होगी।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर में दिनांक 24 नवम्बर 2013 रविवार को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की बड़ी बहन स्वर्गीय श्रीमती सरला शर्मा जी के गत दिनों देहावसान पर गहरा दुख व्यक्त किया गया और उनकी आत्मिक शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई। इस प्रार्थना सभा में आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया, मंत्री शशि कोमल, उप प्रधान पुरुषोत्तम चंद शर्मा, सुरेश महाजन, सुरेन्द्र काली, रवि दत्त आर्य एवं डा. पी.के. त्रिपाठी ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

-डा. पी.के. त्रिपाठी प्रचार मंत्री

शोक प्रस्ताव

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पुराना बाजार लुधियाना की यह शैक्षणिक संस्था श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की बहिन स्वर्गीय श्रीमती सरला शर्मा जी के निधन पर अति दुख व्यक्त करती है। प्रबन्धकर्त सभा के सभी सदस्यों तथा स्कूल के सभी अध्यापिकाओं और अन्य कर्मचारियों ने प्रार्थना सभा के पश्चात दिवंगत आत्मा की शांति के लिये दो मिनट का मौन धारण किया तथा परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति एवं सदगति के लिये प्रार्थना की गई। उस परमात्मा के नियम अटल एवं सत्य है। उन्हें हम सब को नतमस्तक होकर स्वीकार करना ही पड़ता है। हम सब इस दुख की घड़ी में शोक संतप्त परिवार के साथ हैं।

-राजेश शर्मा प्रबन्धक

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज घास मंडी नवांशहर में एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की बड़ी बहन स्वर्गीय श्रीमती सरला शर्मा जी के गत दिनों नई दिल्ली में देहावसान पर गहरा दुख व्यक्त किया गया और उनकी आत्मिक शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई। इस प्रार्थना सभा में आर्य समाज के सभी सदस्यों ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिये दो मिनट का मौन धारण किया तथा परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति एवं सदगति के लिये प्रार्थना की गई। हम सब इस दुख की घड़ी में शोक संतप्त परिवार के साथ हैं। इस प्रार्थना सभा में श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

-अरविन्द नारद प्रचार मंत्री

आर्य समाज नया नंगल का 53वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनांक 8 नवम्बर से 10 नवम्बर 2013 तक आर्य समाज नया नंगल जिला रोपड का 53वां वार्षिक उत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री आचार्य नारायण सिंह जी के वेदों पर प्रवचन और श्री सतीश सुभाष भजन मंडली के मधुर भजन हुये। कार्यक्रम की शुरूआत दिनांक 8 नवम्बर 2013 से आर्य समाज के प्रांगण में हवन यज्ञ से शुरू हुई। इसके पश्चात सतीश सुभाष भजन मंडली के मधुर भजन हुये। तत्पश्चात श्री नारायण सिंह जी ने वेदों पर सारगर्भित प्रवचन दिया जिस का आम जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। इसके पश्चात श्रीमती सुशीला सरदाना की अध्यक्षता में स्कूल की विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों की भाषण प्रतियोगिता करवाई गई। प्रतियोगिता के अंत में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को ईनाम बांटे गये। मुख्य समारोह दिनांक 10 नवम्बर को प्रात: हवन यज्ञ से शुरू हुआ। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री प्रमोद कुमार जी बने। इसके बाद मुख्य समारोह शुरू हुआ और इसमें कई उच्च कोटि के विद्वानों ने अपने अपने विचार प्रस्तुत किये जिस का नया नंगल् की जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। दोपहर 2.00 बजे ऋषि लंगर का आयोजन किया गया जिसमें लोगों ने लंगर आनन्द उठाया।

www.thearyasamaj.org

वेद वाणी

द्यामिन्द्रो हरिधायसं पृथिवीं हरिवर्पसम्।
अधारयद्धरितोर्भूरि भोजनं ययोरन्तर्हरिश्चरत्॥

-ऋ०-३/४४/३

विनय-ये इन्द्र, ये परमेश्वर 'हरि' हैं, पाप-ताप का हरण करने वाले हैं। इसलिए इन इन्द्र-सूर्य की असंख्य रश्मियाँ 'हरि' कहलाती हैं। ये भी अज्ञान-अन्धकार, मलिनता और रोग का हरण करती हैं। इसीलिए इन्द्र की इन दो प्रसिद्ध शक्तियों का नाम भी 'हरि' है। इन्हें ऋक् और साम कहो, वाणी और प्राण कहो, ज्ञान और बल कहो। इन हरियों-सहित वे हरि इस संसार के अणु-अणु में, रोम-रोम में रम रहे हैं और इसको हरिमय कर रहे हैं। तभी तो वह द्यौः 'हरिधायस्' हुआ है, यह पृथिवी 'हरिवर्पस्' हुई है और द्यावापृथिवी 'हरित्' बने हैं। वह 'द्यौः' हरि की उन असंख्यात हरि-रश्मियों से भरपूर है, उन्हीं द्वारा धारित है। यह पृथिवी भी उन्हीं हरि-रश्मियों से ढकी हुई है, उसके हरित्व से रँगी हुई हरिवर्णा हो रही है, और ये द्यावापृथिवी हरित्, हरिमय बन गए हैं। इस प्रकार इन इन्द्र ने हरि होकर द्यौ और पृथिवी को धारण कर रखा है। उसने इस द्यावापृथिवी को न केवल धारण कर रखा है अपितु वह इसका लगातार पोषण भी कर रहा है। वह इन हरितों (द्यावापृथिवी) में प्रभूत भोजन, बहुत-बहुत भोग-सामग्री, सब चराचर प्राणियों के लिए अनगिनत प्रकार के भोग उत्पन्न करके उनका निरन्तर पालन-पोषण भी कर रहा है। उसने द्यावापृथिवी को ही नहीं, किन्तु इसके लिए अमित भोजन को भी धारण कर रखा है। इस धारण-पोषण के लिए वह हरि इनके अन्दर संचारित है, इन द्यावापृथिवी का अन्तर्यामी होकर विचर रहा है, प्रत्येक वाणी व पदार्थ के अन्दर प्राण होकर उसे अन्दर से गति दे रहा है। वह हरि चूँकि इस प्रकार अपनी हरि-शक्तियों-सहित इन द्यावापृथिवी का अन्तश्चारी हो रहा है, यही कारण है जिससे ये द्यावापृथिवी 'हरित' हो गए हैं। ओह! यह सब संसार कैसा हरिमय हो रहा है! हमारे 'हरि' प्रभु के रमने के कारण देखो, कैसा हरिमय हो रहा है।

साभार-वैदिक विनय, प्रस्तुति-रणजीत आर्य

सामाजिक सुधारों के अग्रदूत थे महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द सामाजिक सुधारों के अग्रदूत थे। उन्होंने समाज से अंधविश्वास, पाखण्ड दूर किया। यह बात वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र ने डीएवी पब्लिक स्कूल गढ़ेपान कोटा में आयोजित 'हमारे प्रेरणा स्त्रोत स्वामी दयानन्द' विषय पर आयोजित व्याख्यान में कही। उन्होंने कहा 19 शताब्दी में देश परतन्त्र था समाज में घनघोर अशिक्षा, अंधविश्वास था। स्वामी दयानन्द ने सर्वप्रथम समाज में फैली कुरीतियों, बुराईयों व पाखण्डों को दूर करने का कार्य किया इसलिए वे हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं। कार्यक्रम में जिला सभा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा सत्य के प्रकाश के लिए स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' अमर ग्रन्थ लिखा। आर्य समाज के छठे नियम को संसार के उपकार से जोड़ा गया है। इसलिए जिला सभा के द्वारा समाज सेवा के अनेक कार्य किए जाते हैं। आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि जो मार्ग स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बतलाया आर्य समाज उन आदर्शों को अपना रहा है। उन्होंने स्टूडेन्ट शब्द की व्याख्या करते हुए छात्रों को श्रेष्ठ विद्यार्थी बनने की प्रेरणा दी। डी.ए.वी. की प्राचार्या श्रीमती अंजू उतरेजा ने धन्यवाद अर्पित करते हुए कहा कि छात्र स्वामी दयानन्द के आदर्शों को अपनायेंगे और जीवन को वैदिक संस्कारों से ओतप्रोत करेंगे। हमारा लक्ष्य है संस्कारयुक्त जीवन बनाना। कार्यक्रम का प्रारंभ छात्रों द्वारा ईश्वर स्तुति प्रार्थना, उपासना के मंत्रों का भावार्थ सहित सामूहिक पाठ के साथ हुआ। कार्यक्रम के जिला आर्य सभा कोटा द्वारा डी.ए.वी. स्कूल की प्राचार्या महोदय को स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन पर आधारित फिल्म की हिन्दी और अंग्रेजी की डी.वी.डी. भेंट की । अंत में सामूहिक शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

-अर्जुन देव चड्ढा

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

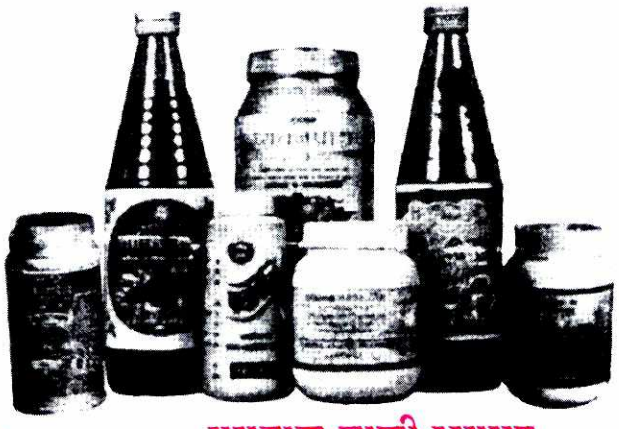

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्वयनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।